# 91 के इरफ़ान हबीब

मोहम्मद आरिफ

मध्यकालीन भारत के दिग्गज इतिहासकार इरफ़ान हबीब 91 वर्ष के हो गए हैं। बीसवीं सदी के छठे दशक में जब इरफ़ान हबीब ने लिखना शुरू किया, उस वक़्त तक मध्यकालीन भारत के इतिहास का दायरा सुल्तानों, मुग़ल बादशाहों और उनके दरबारों, हिंदू राजाओं के जीवन और उनके इतिहास तक सीमित था। यह मुख्यतः राजनीतिक क़िस्म का इतिहास था, जिसमें तारीख़ों और युद्धों के विवरण का भरमार था। सर यदुनाथ सरकार से लेकर बेनी प्रसाद, ईश्वरीप्रसाद, आरपी त्रिपाठी, आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव तक। यहाँ तक कि इतिहासकार सतीश चंद्र की पहली पुस्तक भी औरंगज़ेब और उसके ठीक बाद के मुग़ल दरबार, उसके गुटों व उनकी राजनीति पर ही केंद्रित थी।

ऐसे में इरफ़ान हबीब की क्लासिक किताब 'द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ़ मुग़ल इंडिया' ने शासक वर्ग तक सीमित हो चले मध्यकालीन इतिहास के परिसर में किसानों को उनकी वाजिब जगह दिलाने का काम किया। 1963 में छपी इस किताब के अब साठ साल पूरे होने को हैं, लेकिन मुग़लकालीन अर्थव्यवस्था, किसानों की स्थिति, कृषि की ऐतिहासिक दशा पर यह पुस्तक आज भी अपना सानी नहीं रखती।

कृषि और किसानों के साथ-साथ आर्थिक इतिहास, मध्यकाल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इतिहास पर भी इरफ़ान हबीब ने शानदार काम किया। उन्होंने 'कैम्ब्रिज इकनॉमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया' का सम्पादन भी किया।

इसके साथ ही इरफ़ान हबीब ने मुग़ल साम्राज्य का मानचित्र तैयार करने और भारत का जन-इतिहास लिखने का महत्त्वाकांक्षी कार्य अंजाम दिया। छपने के साथ ही उनकी पुस्तक 'एटलस ऑफ़ द मुग़ल एंपायर' मध्यकालीन भारतीय इतिहास का एक अनिवार्य संदर्भ ग्रंथ बन गई। सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक-आर्थिक भूगोल को समझने के लिए यह किताब आवश्यक है। दूसरी ओर, उन्होंने 'पीपल्स हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया' सीरीज़ के अंतर्गत भारतीय इतिहास पर पुस्तकों की एक ऋंखला लिखी और सम्पादित की।

वे लंबे समय से ब्रजभूमि के दस्तावेज़ों पर काम कर रहे थे। खुशी की बात है कि अभी पिछले ही वर्ष इसी विषय पर उनकी अत्यंत महत्त्वपूर्ण किताब 'ब्रज भूम इन मुग़ल टाइम्स' प्रकाशित हुई। जो उन्होंने दिवंगत इतिहासकार तारापद मुखर्जी के साथ लिखी है। मुग़ल काल में ब्रज क्षेत्र के तीन गाँवों वृंदावन, राधाकुंड और राजपुर में संरक्षित ब्रज और फ़ारसी के दस्तावेज़ों के जरिए गोसाईयों, किसानों और मुग़ल राजव्यवस्था के इतिहास से जुड़े अछूते पहलुओं को प्रकाश में लाने का काम इस किताब में उन्होंने बखूबी किया है।

किताबों के साथ-साथ उनके कुछ लेख भी क्लासिक का दर्जा रखते हैं और ऐतिहासिक सूचनाओं, विश्लेषण और भारतीय इतिहास और समाज के बारे में अपनी गहरी अंतर्दृष्टि के लिए जाने गए। मसलन, मुग़लकालीन भारत की अर्थव्यवस्था में अंतर्निहित पूँजीवादी विकास की सम्भावनाओं और उसके मार्ग में आने वाले अवरोधकों पर उनका वह लेख पढ़िए, जो 'जर्नल ऑफ़ इकनॉमिक हिस्ट्री' में छपा था। या फिर 'कैम्ब्रिज इकनॉमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया' के दूसरे खंड पर उन्होंने जो लंबा समीक्षात्मक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक सच्चाई को अनदेखा कर औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के बारे में लिखने की ऐतिहासिक त्रुटि को उजागर किया था। यह लेख मॉडर्न एशियन स्टडीज़' में छपा था। इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ लिखा है उन्होंने-----

91 वर्षीय इरफ़ान हबीब को आप कभी सेमिनार या कांफ्रेंस हाल में देखें-सुनें तो आपको आश्चर्य होगा कि इस उम्र में भी कोई अपने काम के प्रति इतना समर्पित, प्रतिबद्ध कैसे हो सकता है। सिर्फ़ बोलते हुए ही नहीं, दूसरे वक्ताओं को सुनते हुए भी। सुबह से शाम तक वे आपको सेमिनार में दूसरे विद्वानों के पर्चे पूरी गम्भीरता से सुनते हुए फुलस्केप काग़ज़ पर अपनी सुंदर लिखावट में नोट्स लेते हुए मिलेंगे। थकान का एक कतरा भी उनके चेहरे पर आपको नज़र नहीं आएगा। उनकी प्रतिबद्धता, समर्पण और ज्ञान के प्रति उनका गहरा अनुराग मेरे जैसे इतिहास के छात्रों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है। 91वें जन्मदिन की मुबारकबाद, इरफ़ान सर!

व्यंग्य

# त्यागमूर्ति अंबानी पिछले जन्म में ज़रूर स्वतंत्रता सेनानी रहे होंगे!

विष्णु नागर

हिंदी अखबारों में पहले पेज पर खबर पढ़ी कि अपने सिरमौर उद्योगपति मुकेश अंबानी जी लगातार दो साल से रिलायंस इंडस्ट्रीज से वेतन नहीं ले रहे हैं तो मैं अचानक बहुत भावुक हो गया। रोकते-रोकते भी आंसू आ गए। इसे कहते हैं त्याग! एक मैं था,जब नौकरी करता था तो मैंने एक दिन का वेतन भी नहीं छोड़ा और ये इतने बड़े आदमी होकर भी एक तो बेचारे अपने ही संस्थान में नौकरी कर रहे हैं और ऊपर से एक रुपया भी वेतन नहीं ले रहे हैं! इतना ही नहीं,11 साल से ये, इतना ही वेतन ले रहे थे और अब उसे लेना भी छोड़ दिया है!

आप समझ सकते हैं कि अब मुझे अपने पर कितनी शर्म आ रही होगी! मन तो हुआ था एक बार कि कुएं में कूद जाऊं मगर कुआं आसपास कहीं है नहीं।नदी भी यहां से काफी दूर है। चलते -चलते ही इतना थक जाता कि इतनी ताकत नहीं बचती कि कूद पाता। ऐसे मामलों में परिवारजन और घनिष्ठ मित्र भी आपका साथ नहीं देते! एक रास्ता यह था कि टैक्सी-स्कूटर लेकर नदी तक जाता मगर अभी-अभी कांवड़ियों को मीलों पैदल चलते हुए देखा तो मेरे हिन्दू- मन को पैदल जाना ही उचित लगा। तो खैर, जनता-जनार्दन की इच्छा का सम्मान करते हुए मैंने कूदना स्थगित कर दिया है। इस स्थगन का एक और कारण भी है। अगर मैं नदी में कूद जाता तो आपको यह कौन बताता कि हमारे देश में कैसी- कैसी त्यागमूर्तियां आज भी मौजूद हैं मगर हम उनकी इज्जत करना नहीं जानते! अडाणी जी भी उन्हीं त्यागमूर्तियों में से एक हैं। उन्होंने अभी जून में घोषणा की कि वह 60 हजार करोड़ रुपये दान करेंगे। कितना बड़ा दिल पाया है उन्होंने कि बैंकों का अरबों का कर्ज सिर पे चढ़ा हुआ है मगर उसकी चिंता न करते हुए बंदा इतना बड़ा दान कर रहा है! कितना महान जज्बा है। यह भी एक कारण था कि मैंने कूदना पसंद नहीं किया। उनकी तरफ भी आपका ध्यान दिलाना जरूरी था। खैर।

मुझे अटूट विश्वास है कि मुकेश भाई ने अपना सारा वेतन, भत्ते, कमीशन सब प्रधानमंत्री स्वसहायता कोश में जमा करवा दिया होगा वरना वे ऐसा कठोर निर्णय क्यों करते! पिछले साल कोरोना था तो जनकल्याण में उन्होंने यह धन लगवा दिया होगा,इस साल उनका मिशन प्रधानमंत्री स्वसहायता रहा होगा!अगर अडाणी जी देश के लिए इतना त्याग कर सकते हैं तो अंबानी जी क्यों नहीं कर सकते!हर साल अंबानी जी 15 करोड़ रुपए सालाना वेतन लिया करते थे।दो साल के बने तीस करोड़ रुपए! कम नहीं होती इतनी राशि! जनकल्याण के लिए तो यह जरूरत से अधिक है! इसमें से पांच-दस करोड़ रुपए वापस अपनी जेब के हवाले किए जा सकते हैं!

बस एक ही चिंता मुझे सता रही है कि बिना तनख्वाह के बेचारों का खर्च कैसे चलता होगा? करीब 15 हजार करोड़ का 27 मंजिला इन्होंने महल बनाया है। आजकल तो हर शुभ-अशुभ काम सरकारी बैंक से कर्ज लेकर ही किया जाता है। अंबानी जी इसके अपवाद न होंगे।हर महीने इसकी किस्तें चुकाते होंगे!फिर इस महल में झाड़ू -पोंछे पर ही हर साल एक करोड़ खर्च करने पड़ जाते होंगे!दो- तीन करोड़ इस महल के निवासियों की सेवाटहल में लगे कर्मचारियों का वेतन होता होगा। फिर महल के बिजली-पानी के अलावा कारों आदि का मेंटेनेंस का खर्च भी दो-चार करोड़ से कम क्या होगा! छह- सात लोग इस महल में रहते हैं। उनका और उनके द्वारा दी गई शाही पार्टियों का न्यूनतम खर्च एक करोड़ से कम क्या आता होगा! फिर अंबानी जी की माता जी पर भी खर्च होता होगा। गृहस्थी में तो बहुत से खर्च लगे रहते हैं। बड़े लोग,बड़े खर्च! हमारा बजट बिगड़ जाता है तो उनका तो निश्चित ही बिगड़ता होगा! अकेले नीता अंबानी जी साल में कुल दो करोड़ पांच लाख रुपए कमाती हैं।उससे घर खर्च कैसे चलता होगा!इनके दो बेटे आदि कुछ कमाते हैं कंपनी से,इसका ब्योरा नहीं मिलता।कमाते भी होंगे तो दो -चार लाख महीना कमाते होंगे!उसका विवरण क्या देना!फिर बेटे-बहू की तनख्वाह पर आदर्श हिन्दू परिवार नज़र नहीं रखता!

फिर भी जज्बा देखिए कि वेतन, भत्ते, कमीशन कुछ नहीं ले रहे हैं! त्याग की भी कोई लिमिट होती है!आदमी पेट काटकर, बैंकों से कर्ज लेकर भी त्याग करता है। निश्चित रूप से पिछले जन्म में अंबानी जी स्वतंत्रता सेनानी रहे होंगे वरना ऐसा अतुलनीय त्याग आज कौन करता है ! अंबानी जी -अडाणी जी लगे रहो इसी तरह जनकल्याण में!घर -घर मोदी की तरह एक दिन घर -घर अंबानी भी होगा!समय सबके साथ न्याय करता है!

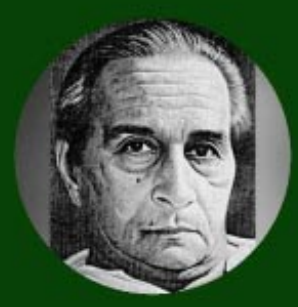

चाहे कोई दार्शनिक बने साधु बने या मौलाना बने, अगर वो लोगों को अंधेरे का डर दिखाता है, तो ज़रूर वो अपनी कंपनी का टॉर्च बेचना चाहता है।

हरिशंकर परसाई। हिन्दीनामा

परसाईजी को गए हुए 27 साल हो गए! उन्हें कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आज के दौर में भी वह देश के सर्वाधिक प्रासंगिक, और प्रति दिन सर्वाधिक उद्धृत लेखक हैं। उनकी स्मृति को कड़क सलाम!